'ग़दीर' मुबारक

मु0 र0 आबिद

10 हि0/632 ई0 का हज

लगभग पूरा अरब देश इस्लाम अपना चुका। इस्लाम के फैलते हुए असर के साये में आसपास के देशों के भी और दूर–दूर तक के लोग आते हुए। प्यारे नबी (स0) सभी को ख़ास तौर से अपने साथ हज्ज में शामिल होने का न्योता दे चुके। पूरा मुसलमान जगत बड़े ज़ोर–शोर से, बड़े हर्षोल्लास से और बड़े गर्व नाज़ से बड़ाई के इस शुभ पाक मौक़े को हाथ से जाने देना नही चाहता। हज्ज भी जुमे को पड़ रहा है, हज्जे अकबर (महानतम हज्ज) है। फिर रसूल (स0) का मुबारक साथ कितना विशिष्ट है, शरफ़ (प्रतिष्ठा) वाला है ये उन्हीं सच्चे मुसलमानों का दिल जानता है। लोग गुट–गुट, दल–दल, आते जा रहे हैं। उनकी गिनती 6 अंकों (Digits) में पहुँच चुकी है। रसूल (स0) के समय का सबसे बड़ा मजमा है। माहौल में पकाई और पुण्य ही घुला हुआ है। तलबिया (अल्लाहुम्मा लब्बैक/ हाँ! हाँ!! ऐ अल्लाह हाज़िर हूँ।) की आवाज़ें काबे का तवाफ (परिक्रमा) करती हुई।

ऐसे हज्ज के बाद, कोमल मन से सब बिदाई लेते, अपने–अपने घरों की ओर जाते हुए, प्यारे नबी (स0) भी मदीने की ओर बढ़ते हुए। ग़दीरे ख़ुम (ख़ुम का तालाब ग़दीर = ताल) से सबके रास्ते कटते हैं। यहाँ पहुँते ही वही (ईश्वरवाणी) आती है:

''ऐ रसूल, जो (हुक्म) आप पर उतारा जा चुका है उसे पहुँचा दीजिये, यदि यह न किया तो रिसालत (उसका संदेश) पहुँचाया ही नहीं, अल्लाह आपको लोगों (की बुराई) से बचाए रखेगा, अल्लाह तो नास्तिक (काफ़िर) लोगों की हिदायत (सन्मार्ग दिखाने) नहीं करता।'' ('सूरा माएदा' आयत 67)

[अरे यह क्या? ख़ुदा तो अपने प्यारे नबी (स0) से बड़े प्यार भरे लहजे में बात करता है। यहाँ पूरा–पूरा सरकारी लहजा है। रसूल (स0) लगभग पूरा दीन/धर्म पहुँचा चुके हैं, और बड़ी पीड़ाएँ, बड़ी कठिनाइयाँ झेलकर। कोई ऐसी ही बड़ी बात पहुँचाने को रह गई है जिसके न पहुँचाने को माने सिरे से रिसालत का कोई काम न होना बताया जाता है। लेकिन कुछ तो था जिस पर रसूल (स0) ठिठक रहे थे और जिस पर आयत में सुरक्षा का वादा है। अब देखना है प्यारे नबी (स0) क्या करते हैं, क्या पहुँचाते हैं।]

बहुत बड़ा मैदान है। दोपहर का समय (इतवार 18 ज़िलहिज्जा 10 हि0/632 ई0) है। रसूल (स0) रुक जाते हैं। आगे बढ़ जाने वालों को वापस बुलाते हैं। पीछे आने वालों का रास्ता देखते हैं। सबके मन में खलबली। यह क्या माजरा है। सबकी आँखें और मन पूरी तरह रसूल (स0) की ओर। [यह सब ऊपर वाले की ओर से कि कोई यहाँ की बात भूल न सके। अब भी कोई भूल जाए तो अचम्भा! दुर्भाग्य!! शरारत!!!] रसलू (स0) ने ऊँट की गद्दियों को इकट्ठा कर मिंबर बनाया। इस नये Radymade मिंबर पर आप (स0) तशरीफ़ ले जाते हैं। प्रवचन (ख़ुतबा) देते हैं। ख़ुदा की हम्द संस्तुति के बाद उसके संदेश और अपने धर्म प्रचार की बात करते हैं। अपने जल्दी जाने का, विदा होने का इशारा भी कर देते हैं। अब तक के प्रचार और धर्म की बातें बताने के चलन में कुछ नयापन लाते हैं, थोड़ा सा अलग

ढब। लोगों से पूछते हैं: ''क्यों तुम्हारी जानों पर तुम्हारा ज़्यादा हक़ (अधिकार, आधिपत्य) है या मेरा?'' सब एक बोल कहते हैं: ''आपका, बेशक आपका ही ज़्यादा हक़ है।'' (फिर अपने दोनों हाथों से हज़रत अली (अ0) को ऊँचा कर सामने कर कहते हैं) 'जिसका मैं मौला हूँ उसका यह अली (अ0) भी मौला* है'

वहीं कुछ शक शंका भी सर उठाती है। विरोध की आवाज़ भी जागती है। कुछ आवाज़ें रसूल (स0) से पूछती हैं 'क्या ये बात आप अपनी ओर से कह रहे हैं या खुदा की बात है' प्यारे नबी (स0) कहते हैं: 'मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं किया, न कुछ कहा। जो है वह खुदा की ओर से, उसी का हुक्म (आदेश) था जो मैंने किया, जो कहा, जो बताया' इसी में एक (हारिस बिन नोमान फ़हरी) ने यहाँ तक कह दिया कि यदि यह रसूल (स0) की ओर से न हो और खुदा की तरफ़ से हो तो खुदा मुझ पर अज़ाब डाले। ऊपर से एक पत्थर उसके सर पर आया और वह उसी समय मर गया।

(आयत उतरती है:)

'आज काफिर लोग तुम्हारे धर्म (से फिर जाने से) निराश हो गये, तो तुम उनसे तो डरो ही नहीं बल्कि मुझसे डरो, आज मैंने तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें (अच्छाइयाँ, भलाइयाँ) समाप्त (पूरी) कर दीं और तुम्हारे (धर्म) इस्लाम को पसन्द कर लिया' (सूरा 'मायदा' आयत–3)

फिर बधाई, मुबारकबाद का शोर।

सब मुसलमान खुश, मौला मिल गया। इस्लाम प्रसन्न, रक्षक मिल गया। धर्म विश्वास खिल गया, धर्मपाल मिला, अब धर्म अनाथ न होगा। □□□

बक़िया शादी का निज़ाम.......

लिमुवक्किली अलल महरिल मालूमि बिश्शरतिल मालूम।

(मैं मालूम महेर पर मालूम शर्त के साथ अपने मुवक्किल से निकाह क़बूल/स्वीकार करता हूँ।)

औरत का वकील कहे: ज़व्वजतु मुवक्किलती मुवक्कि–ल–क अलल महरिल मालूमि बिश्शरतिल मालूम।

(मैं मालूम शर्त के साथ मालूम महेर पर अपनी मुवक्किला को आपके मुवक्किल की ज़ौजा (बीवी) करता हूँ।)

मर्द का वकील कहे: क़बिल्तुतज़वी–ज लिमुवक्किली अलल महरिल मालूमि बिश्शरतिल मालूम।

(मैं मालूम शर्त के साथ मालूम महेर पर अपने मुवक्किल की शादी (दाम्पत्य) क़बूल करता हूँ।)

तौकील (वकील होने) का सीग़ा

बेहतर यह है कि अक़्द के बाद एक शख़्स निकाह करने वाले से तौकील (वकील होने) के सीग़े को जारी करने की इजाज़त ले ले और दूसरा शख़्स औरत की तरफ से तौकील के क़बूल करने का वकील हो जाए। फिर

मर्द का वकील कहे: वक्कलतु फुलानतन फित्तलाक़ि अन्नी बिनफ्सिहा औ बिवकीलिहा बिश्शर्तिल मालूम।''

(मैं अपनी ओर से मालूम शर्त के साथ फुलानी (अमुका) को उसके द्वारा या उसके वकली द्वारा तलाक़ (के सम्बन्ध) में वकील करता हूँ।)

औरत का वकील कहे: क़बिल्तुत्तौकील लिमुवक्किलती बिश्शरतिल मालूम।

(मैं मालूम शर्त से अपने मुवक्किल की ओर से (इस तरह) वकील करने (बनाने) को क़बूल करता हूँ।) □□□

* मौला अरबी शब्द है जिसके माने हैं: मालिक, स्वामी, रखवाला, संरक्षक, साथी, साझी, दोस्त, संबन्धी, आज़ाद किया हुआ दास (गुलाम)